महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा से पी-एच.डी.(हिन्दी) की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध की रुपरेखा

शोध का शीर्षक

"मेहरुन्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में मध्यम एवं निम्नवर्गीय नारी-जीवन : एक अध्ययन"

“Mehrunnisa parvez ke Katha Sahitya mein Madhyam evam Nimnavargiya Nari-jivan: Ek Adhyayan”

अनुसंधित्सु
सरोज सुमन रामलवट
शोध-छात्रा
हिन्दी विभाग, कला संकाय,
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
बड़ौदा

निर्देशिका
डॉ. मनीषा ठक्कर
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, कला संकाय,
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
बड़ौदा

नामांकन संख्या: FOA /1418

दिनांक: 21-09-2016

हिन्दी विभाग,
कला संकाय,
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
बड़ौदा

वर्ष – 2023

मेहरुन्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में मध्यम एवं निम्नवर्गीय नारी-जीवन : एक अध्ययन

साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से मानवीय भावों तथा अनुभूतियों को प्रकट करता है । वह समाज की स्थिति को वास्तविकता से प्रस्तुत ही नहीं करता बल्कि जीवन के यथार्थ को उजागर भी करता है । अपने प्रतिष्ठित समाज के लिए वह एक पथ प्रशस्त करता है । स्वतंत्रता के उपरांत हिंदी साहित्य में तीव्रगति से बदलाव आया और उसके स्वरूप में अनेकों प्रवृत्तियों का समावेश किया गया । उनमें मानवीय कलायुक्त तथा सार्थक खोज की प्रक्रिया को सफलता से प्रारंभ किया । समकालीन कथा साहित्य में यह बदलाव स्पष्ट रूप से देखा गया, महिला साहित्यकारों का हिंदी साहित्य में आगमन इसका स्पष्ट उदाहरण है । लेखिकाओं ने अपनी तटस्थ दृष्टि से समाज की ज्वलन्त चुनौतियों को असंतुलित स्थितियों एवं प्रवीणता को अपनी लेखनी से स्पष्ट किया है ।

मानवीय समाज आदिकाल से ही अनेकताओं से युक्त रहा है । समर्ग विश्व में कहीं भी ऐसा मानवीय समाज नहीं है, जहां किसी भी प्रकार से वैविध्यता ना देखने को मिलती हो । भले ही इस विविधता का कारण देशकाल तथा स्थिति के अनुरूप भिन्न-भिन्न समाज के लिए भिन्न-भिन्न रहे हो । किंतु मानवीय समाज में विविधता हमेशा ही विद्यमान रही हैं । अपने समाज के इर्द-गिर्द अनेकता देखने को मिलती है । जैसे बच्चे, जवान, वृद्ध, आयु, आय, व्यापार, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, स्थिति, रहन-सहन, परिधान, खान-पान, संस्कृति समस्याएं तथा विचारों को, जीवन के उपार्जन के कार्य व व्यवसाय विभिन्न क्षेत्रों की विविधताएँ दिखाई देती है । इन्ही विविताओं के आश्रय से मानव अपने सामाजिक दायरा प्राप्त करता है और उसी के अनुरूप वह अपनी दायित्वों का पालन करता है । मेहरुन्निसा परवेज ने अपने कथा साहित्य में मुख्य रूप से मानव जीवन के भावों एवं अनुभूतियों को अंकित किया है । जिसके कारण समकालीन लेखिकाओं में उनका स्थान श्रेष्ठ है । समाज के विभिन्न वर्गों की वेदना, दु:ख-दर्द तथा अकुलाहट को अपनी कृतियों के माध्यम से व्यक्त करने का वास्तविक प्रयास किया है । समाज में व्याप्त विविधताओं तथा परेशानियों का चित्र उनके

उपन्यास तथा कहानियों में गहनता से देखने को मिलता है। उनका साहित्य हमारे आस-पास मौजूदा जीवन को प्रस्तुत करता है। अपने साहित्य के माध्यम से मेहरुन्निसा परवेज जी ने साहित्य जगत में एक अलग स्थान प्राप्त किया है।

समकालीन महिला लेखिकाओं में निम्न तथा मध्यवर्ग चेतना की साक्षात्कार के रूप में मेहरुन्निसा परवेज जी विराजती रही हैं। निम्नवर्ग की शोषण सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक जीवन के कटु यथार्थ, बिखरते दाम्पत्य संबंध, निम्न मध्यमवर्ग व मध्यवर्गीय की नारियों की दर्द भरी वाणी एवं पुकारो को पहचान लिया तथा जिनकी बड़ी सरलता और ईमानदारी से यथार्थवादी चित्रण कर उन परिस्थितियों को बदलना भी चाहा।

मेहरुन्निसा परवेज़ का जन्म 10 दिसंबर 1944 को मध्यप्रदेश के बहेला ग्राम में हुआ। पिता अब्दुल हमीदखान एवं माता मुगल घराने से थीं। वह घरेलू महिला थीं। इनका पालन-पोषण आज़ाद ख्याल परिवार में हुआ लेकिन वे भी शिक्षा में शायद अपने धार्मिक संस्कारों के कारण ही असमर्थ रह गई। मेहरुन्निसा परवेज बहुत अधिक पढ़ी-लिखी नहीं थी। उन्होंने M.A तक की पढ़ाई किसी तरह किया है। वैसे परवेज जी स्वाभिमानी नारी है, अपने जीवन पर वे किसी को हावी होने नहीं देती। उन्हें दूसरे का नाम स्वीकारना पसंद नहीं रहा है। परवेज जी ने अपने परिवार तथा आसपास के वातावरण से प्राप्त विषयों पर लेखन कार्य किया है वहीं से प्रवेश जी के जीवन के हर पहलुओं पर लेखन कार्य किया है। नारी शोषण, वैवाहिक नारी के उत्पीड़न, आदिवासियों की संवेदनाएँ, आदिवासी नारी की पीड़ा, निम्नवर्गीय एवं मध्यवर्गीय नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहरी पकड़ रही है। जीवन के मूल्यों को उभरने का सफल प्रयास किया है। उन्होंने समय अनुसार बदलती विषय वस्तु और परिस्थितियों के अनुसार कथा लेखन किया है, स्त्री-विमर्श एवं समाज में महिलाओं की स्थिति का सजीव चित्रण 'मेहरुन्निसा परवेज़' जी ने अपने कथा साहित्य में किया है। लेखिका ने निम्नवर्गीय एवं मध्यवर्गीय नारी जीवन का बेहद सूक्ष्म निरीक्षण किया है।

एम. ए. में अभ्यास के दौरान मैंने महिला लेखिकाओं की ढेर सारी कहानी एवं उपन्यास पढ़े थे । मेहरुन्निसा परवेज जी की कहानियों ने मुझे भीतर तक झकझोर दिया था । उनकी कथावस्तु की ओर मेरा चित आकर्षित हुआ । मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य पर शोध करने की मेरी प्रबल इच्छा जागृत हुई, कथा साहित्य के प्रति मेरा लगाव पहले से ही रहा जिसके कारण ही , मैं उनके कथा साहित्य की ओर आकर्षित हुई । मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य में नारी केंद्र बिंदु है । उनके साहित्य में निम्न एवं मध्यवर्गीय नारी जीवन के संदर्भ एक अलग दृष्टि परिलक्षित है । उनके कथा साहित्य के पात्र नसीमा, तहमीना, बूँदाजान, कनी इत्यादि नारी पात्र को पढ़कर ऐसा लगता हैं जैसे वे सभी पात्र हमारे आस-पास के ही हैं और इसी कारण उनके साहित्य को और अधिक पढ़ने की इच्छा जागृत हुई । इस शोध का उपदेश मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य में निहित नारी जीवन है । उनके साहित्य में नारी मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग नारी जीवन के कई पहलुओं को इस शोध कार्य के द्वारा प्रस्तुत किया है । उनके कथा साहित्य में लेखन कार्य में नारी जीवन के समस्त समस्याओं एवं मुश्किलों को गहनता से जानने परखने का प्रयास किया है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध पाँच अध्याय में विभक्त है

1. प्रथम अध्ययाय : कथा साहित्य एवं समाज के विभिन्न वर्गों का परिचय

2. द्वितीय अध्याय : मेहरुन्निसा परवेज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3. तृतीय अध्याय : मेहरुन्निसा परवेज़ : कथा साहित्य में मध्यवर्गीय नारी जीवन

4. चतुर्थ अध्याय : मेहरून्निसा परवेज़ : कथा साहित्य में निम्नवर्गीय नारी जीवन

5. पंचम अध्ययाय : मेहरुन्निशा परवेज़ के कथा-साहित्य का शिल्पगत अध्ययन

प्रथम अध्याय के अंतर्गत कथा साहित्य एवं समाज के विभिन्न वर्गों का परिचय चित्रित किया गया है। उपन्यास और कहानी से संबंधित साहित्य को सामुहिक रूप में कथा-साहित्य कहा जाता है। ये दोनों गद्य साहित्य की लोकप्रिय एवं प्रचलित विधाएँ हैं और इनका विकास आधुनिक काल में हुआ है। हिन्दी कहानी और उपन्यास का विकास आधुनिक काल में ही हुआ, किन्तु दोनों के विकास की गति और रीति दोनों ही अलग है, इसलिए दोनों के विकास को सरल और साधारण रूप से समझाया गया है। साथ ही समाज के विभिन्न वर्गों का परिचय दिया गया है। प्रथम उच्च वर्ग जो पूंजीपतियों तथा जमींदारों का वर्ग था। द्वितीय मध्यमवर्ग जिसमें समाज का अधिकांश शिक्षित जन समुदाय सम्मिलित था, तृतीय निम्नवर्ग जिसके अंतर्गत किसान, मजदूर अथवा इसी स्तर के अन्य लोग थे। पूंजी की चोट से सबसे अधिक पीड़ित समाज के निम्न तथा मध्यवर्ग थे। वर्गों की विस्तृत चर्चा इस अध्याय में की गयी है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत मेहरुन्निसा परवेज का व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। उनके व्यक्तित्व के कई पहलू उनके साहित्य में उभरते दिखाई पड़ते हैं उनके ईमानदार संवेदनशील, सादगी, सच्चरित्र, मिलनसार एवं हँसमुख व्यक्तित्व को अगर कोई देख ले तो जिंदगी भर भूल ना सकेगा। उनका बचपन बस्तर के आदिवासियों के बीच गुजरने के कारण उसके अधिकांश रचनाओं में वहां के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक परिवेश और जीवन मूल्य देखने को मिलते हैं। अपना घरेलू संघर्षमय वातावरण, या भोगे हुए कटु यथार्थ और प्राकृति सौंदर्य के प्रति मुग्धता आदि उनके साहित्य सृजन के लिए प्रेरणा स्रोत बने। दर्द की पहचान उन्होंने अपनी जीवन यात्रा में पायी है। पहले वैवाहिक जीवन की शिथिलता झकझोर कर रख देती थीं किंतु डॉ. भागीरथ प्रसाद मिश्र से उनका दूसरा विवाह उनके लिए ईश्वर का वरदान सिद्ध हुआ। अपने बेटे समर की मृत्यु के दु:ख से वे अब तक होश में ना आई है। उनके जीवन के संघर्ष उनके साहित्य में नाम बदलकर ज्यों का त्यों प्रस्तुत हुए हैं। इसी वजह से उनका साहित्य उनके जीवन का आईना बन गया है। गरीब-मजदूर वर्गों की

वेदना आगे चलकर उनके साहित्य निर्माण के लिए अमूल्य निधि बन गयी। जीवन के आँगन में देखे, पहचाने और परखे हुए पात्रों से ही उन्हें अपने कथा साहित्य का कथ्य मिलता रहा है।

उनके अभी तक के छः उपन्यास और चौदह कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त मेहरुन्निसा परवेज जी धर्म युग, सारिका, साप्ताहिक हिंदुस्तान, ऋतुचक्र आदि पत्रिकाओं में कहानियाँ लिख रही हैं। समाज कल्याण हेतु एवं साहित्य प्रेमियों के प्रेरणा स्रोत के रूप में 'समरलोक' पत्रिका का प्रकाशन भी वे कर रही हैं। वे साहित्यकार, समाज सेविका और समाज सुधारक हैं। इन क्षेत्रों की विशिष्ट सेवा के लिए वे कई बार अलंकृत और पुरस्कृत हुए हैं। सन् 2005 ई. में भारत के राष्ट्रपति से पदम् भूषण की उपाधि की प्राप्ति उनके लिए महनीय अलंकार हैं।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य में मध्यवर्गीय नारी जीवन पर प्रकाश डाला गया है।परवेज जी ने जीवन के हर पहलू पर अपनी कलम चलाई है। उन्होंने मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवारों में व्याप्त समस्याएँ, आदिवासी लोगों की समस्याएँ, महानगरीय जीवन की मुश्किलें, नारी जीवन की समस्याएँ, अंधविश्वास की समस्या, प्रेम के प्रति बदलते दृष्टिकोण, दांपत्य जीवन में अलगाव, देश-विभाजन, पारिवारिक विघटन, दांपत्य जीवन में तनाव यह सभी विषय को लेखिका के काल्पनिक ना होकर बल्कि अपने जीवन के यथार्थ अनुभूति तजुर्बों के माध्यम से उत्पन्न किया हैं। उनका बचपन बस्तर के आदिवासियों के बीच गुजरा, इसलिए वहाँ के रीति-रिवाज, संस्कृति, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक,आर्थिक जीवन का विस्तार से चित्रण उनके कथा साहित्य में देखने को मिलता है।

उनके उपन्यास-कहानी की कथावस्तु में मुख्य रूप से मध्यवर्गीय नारी जीवन की कठिनाइयों को निरूपित किया है। समग्र नारी- जीवन को लेखिका ने बड़ी ही सूक्ष्मता से कथानक में उभारा है। शिक्षित, ग्रामीण, शहरी, गरीब, अमीर, स्वावलंबी, आर्थिक विपन्नता हर स्तरों की नारियों का चित्रण कथावस्तु में प्रस्तुत है । परित्यक्ता नारी, विधवा नारी की विडंबना, सुहागन नारी की उलझने,

अकेलापन, वैश्य नारी की समस्या, कुँवारी माँ इस प्रकार नारी के हर स्वरूप का मूल्यांकन अपने कथा साहित्य की कथावस्तु द्वारा उद्घाटित किया है। नारी जाति के विभिन्न प्रश्न, मुश्किलें, दु:ख, वेदना, घुटन, छटपटाहट, बलिदान, त्याग, टूटते सपने, टूटती आकांक्षाएं सभी का वर्णन कथावस्तु में स्थापित है। उन्होंने ना सिर्फ नारी की मुश्किल,परेशानियों को ही दिखाया है, बल्कि नारी के जीवन किस प्रकार होना चाहिए। इस पर भी गंभीरता से विचार किया है। अपने कथा साहित्य के कथानक के माध्यम से परवेज़ जीने नारी पात्रों की अपनी जिंदगी में हररूप में सक्षम, गुणी होने के बावजूद उन्हें अपने हालत के साथ समझौता करना पड़ता हैं, सिर्फ स्त्री होने के नाते उन्हें वेदना, दु:ख तकलीफे झेलनी पड़ी। मेहरुन्निशा परवेज खुद स्त्री होने के नाते जिस दु:ख, पीड़ा, वेदना, अपमान आदि का सामना करना पड़ा उसकी का यथार्थ वर्णन उनके कथा साहित्य में पाया जाता है।

चतुर्थ अध्याय में मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य में निम्नवर्गीय नारी जीवन पर अध्ययन किया गया है। निम्नवर्गीय नारी के जीवन की दु:खती रगों को न केवल पकड़ा है। अपितु उसे वाणी भी दी है। निम्नवर्ग के शोषित नारी की व्यथा कथा को सच्चाई के साथ लोगों के सामने रखते हुए स्त्री विमर्श को नई हवा, नई दिशा दी है। नारी विषय की चर्चा करते हुए लेखिका की दृष्टि इस बात पर रही है, कि नारी का शोषण करना बड़ा अपराध है, क्रूरता है। इसे तुरंत समाप्त करने की जरूरत है। सामाजिक चेतना के अन्याय से ही संभव हो सकता है। विश्व परिदृश्य में नारी में आए बदलाव को ध्यान में रखते हुए भारतीय नारी को शोषण के दलदल से निकालकर मुक्त गगन में विचरण करने के लिए उसे पुरुषों की तरह आजादी देने की जरूरत है। तभी नारी का विकास संभव है हमारे चारों ओर नारी की दयनिय अवस्था देखने को मिल जाती है। वास्तव में हकीकत तो यह है कि भारतीय स्त्री से अधिक दयनीय प्राणी संसार में कठिनाई से मिलेगा।

मेहरुन्निसा जी ने आदिवासियों के बीच पली बड़ी है। जिसके कारण आदिवासी जीवन का उनपर गहरा प्रभाव रहा है। आदिवासियों के जीवन के समस्याओं पर उन्होंने न केवल लिखा ही

बल्कि उनकी गरीबी, शोषण, अंधविश्वास, अज्ञानता, अशिक्षा दूर करने के लिए कई प्रयास भी किये हैं।

पंचम अध्य्याय में मेहरुन्निसा परवेज के कथा का शिल्पगत अध्ययन किया गया है। साहित्य में अनुभूतियों को व्यक्त करने का उनका अलग अंदाज है। इसी कारण से उनका कथा साहित्य शिल्प की दृष्टि से बहुत प्रभावशाली बन पड़ा है। उनके कहानी-उपन्यास की कथावस्तु मानव जीवन की समस्त मुश्किलों को चित्रित करने में सफल रही है। लेखिका ने यथार्थ जीवन की अनुभूतियों को सहानुभूति के साथ साहित्य में प्रस्तुत किया है, उनके साहित्य में उन्होंने पात्रों का समावेश बड़ी सूझ-बूझ के साथ किया है जिसके कारण उनके पात्र पाठकों को संतुष्ट करने में समर्थ रहें है लेखिका ने प्रमुख पात्रों के सहयोग के लिए गौण पात्रों का निर्माण किया है। उनके पात्रों में मौलिकता, सहजता, स्वाभाविकता, मनोविज्ञानता, आदि गुण परिलक्षित हुए हैं। देशकाल वातावरण का चित्र लेखिका ने बहुत ही सावधानी पूर्वक किया है उन्होंने प्राकृतिक वातावरण तथा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र का चित्रण बहुत ही सूक्ष्मदृष्टि के साथ किया है, इसलिए उसमें रोचकता वास्तविकता दिखाई देती हैं। उन्होंने कहावतें, मुहावरे, अंग्रेजी शब्दों, अप शब्दों, ग्रामीण शब्दों, गीतों आदि के प्रयोग से साहित्य में रोचकता तथा सार्थकता उत्पन्न हुई है। वर्णनात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, मनोवैज्ञानिक शैली, पत्रकात्मक शैली, पूर्व दीप्ति शैली, का प्रयोग बहुत ही अनुकूल तथा असरकारक ढंग से प्रस्तुत किया है। अतः हम कह सकते हैं की मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य का शिल्प अत्यधिक कलात्मक वैचित्रमय तथा रुचिकर और प्रभावशाली बन पड़ा है।

अध्यन विभाग

- **प्रथम अध्ययाय**

  कथा साहित्य एवं समाज के विभिन्न वर्गों का परिचय

  कथा साहित्य का परिचय

  उपन्यास साहित्य का परिचय

  पूर्व प्रेमचंद युग

  प्रेमचंद युग

  प्रेमचंदोत्तर युग

  कहानी साहित्य का परिचय

  प्रारंभिक कहानियाँ

  नयी कहानी

  समाज के विभिन्न वर्गों का परिचय

  उच्चवर्ग

  मध्यवर्ग

  निम्नवर्ग

- **द्वितीय अध्याय**

  मेहरुन्निसा परवेज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

  जन्म तथा नामकरण

  माता-पिता

  बचपन

  शिक्षा

वैवाहिक जीवन

व्यक्तित्व एवं अभिरुचियाँ

लेखन प्रेरणा

सामाजिक कार्य

पुरस्कार एव सम्मान

उल्लेखनीय वृद्धि

सभी धर्मो के प्रति आस्था

सदृहणी

समाजसेवी

प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति असीम लगाव

सवतुस्टी के लिए लेखन

पिछड़े वर्गों के प्रति संवेदना

कर्म के प्रति दृढ़ विश्वास

युवा साहित्यकारों को मार्गदर्शन

नारी सम्मान की हिमायती

मेहरुन्निसा परवेज का उपन्यास साहित्य

आँखों की दहलीज

उसका घर

कोरजा

अकेला पलाश

समरांगण

पासंग

मेहरुन्निसा परवेज का कहानी साहित्य

आदम और हव्वा

टहनियों पर धूप

गलत पुरूष

फाल्गुनी

अन्तिम चढ़ाई

एक और सैलाब

सोने के बेसर

अयोध्या से वापसी

ढ़हता कुतुबमीनार

रिश्ते

अम्मा समर

लाल गुलाब

मेरी बस्तर की कहानियाँ

- **तृतीय अध्याय**

मेहरुन्निसा परवेज़ : कथा साहित्य में मध्यवर्गीय नारी जीवन

- **चतुर्थ अध्याय**

मेहरून्निसा परवेज़ : कथा साहित्य में निम्नवर्गीय नारी जीवन

- **पंचम अध्याय**

मेहरुन्निशा परवेज़ के कथा-साहित्य का शिल्पगत अध्ययन

शिल्प का अर्थ एवं स्वरूप

मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यास और कहानी का शिल्प कथानक

. कथा का शिल्प

कथा का चयन

कथा का आरंभ

कथा का विकास

कथा का समापन

• पात्र एवं चरित्र चित्रण

प्रमुख पात्र

गौण एवं सहायक पात्र

खल पात्र

आदर्श वादी पात्र

मनोवैज्ञानिक पात्र

व्यक्तिवादी पात्र

कामकाजी पात्र

• कथोपकथन एवं संवाद योजना

• देशकाल वातावरण

•भाषा एवं शैली

तत्सम एवं तद्भव शब्द

संस्कृत शब्द

अरबी, फारसी, उर्दू शब्द

ग्रामीण शब्द

सार्थक और निर्थक शब्द

समान संयुक्त शब्द

अंग्रेजी शब्द

लोकगीतों का प्रयोग

अशिष्ट शब्दों का प्रयोग

कहावतें एवं लोकोत्तियों का प्रयोग

. शैली

वर्णनात्मक शैली

आत्मकथात्मक शैली

संवादात्मक शैली

मनोविश्लेषणात्मक शैली

पत्रात्मक शैली

पूर्व दीप्ति शैली

उद्देश्य

उपसंहार

परिशिष्ट – 1

मेहरुन्निसा परवेज के साथ शोधार्थी का साक्षात्कार

परिशिष्ट – 2

आधार ग्रन्थ सूची

सहायक ग्रन्थ सूचि

पत्र पत्रिकाएँ

वेबसाइट

दिनांक: विनीत

(सुमन रामलवत सरोज)